एस. पी. जैन गुरुकुल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खुरई

गुरुकुल सन्देश

विद्यालय का मासिक मुखपत्र....

अंक- 82 | www.gurukulkhurai.in | माह-मार्च+अप्रैल, 2026

सम्पादकीय-

उल्लास, उमंग, उत्साह एवं रोमांच से सराबोर अप्रैल

प्रयंक जैन (प्राचार्य)

प्रिय पाठक वृन्द !

एक ओर सत्र की समाप्ति तो दूसरी ओर संपूर्ण सत्र का सबसे निर्णायक समय तो वहीं मन में उत्साह भी। संपूर्ण सत्र में हुई शैक्षणिक-सहशैक्षणिक गतिविधियां के पश्चात सत्र समाप्त हुआ; इस सत्र में अनेकानेक खेलकूद-बौद्धिक प्रतियोगिताएं, वार्षिकोत्सव, खेल महोत्सव, शैक्षणिक भ्रमण एवं साइकिल रैली जैसे कार्यक्रमों ने विद्यार्थियों के मन में विद्यालय के प्रति और अधिक समर्पण भाव से जुड़ने का मौका दिया। समय-समय पर अभिभावकों का सहयोग भी स्तुत्य है, अभिभावकों ने जिस विश्वास के साथ अपने पाल्य के लिए गुरुकुल चुना है उस विश्वास पर खरा उतरना हमारी जिम्मेदारी है; जिस हेतु वचनबद्ध होकर हम अहर्निश लगे हुए हैं।

वहीं मन में कहीं ना कहीं डर भी था कि जिस नवीन शिक्षण पद्धति से विद्यालय में अध्यापन हो रहा है उसका निष्कर्ष क्या रहेगा ? **परंतु कुछ मुकाम हासिल करने के लिए पारंपरिक पद्धतियों से हटकर कठोर निर्णय लेना ही पड़ते हैं साथ ही नवाचार एवं दृढ़संकल्पता के साथ काम करने से सफलता मिलती ही है।** मौखिक रूप से अपने आप को अच्छा कहना अलग विषय है परंतु शिक्षकों के द्वारा विद्यार्थियों के लिए किया गया परिश्रम और विद्यार्थियों के द्वारा उस परिश्रम का परिणाम मौन रूप में ही अपने सर्वश्रेष्ठ होने की गवाही देता है। संस्था प्रमुख होने के नाते विद्यार्थियों का परिणाम व्यक्तिगत रूप से बहुत मायने रखता है; वास्तव में विद्यार्थियों की सफलता में ही सभी की सफलता है। सही अर्थों में कहा जाए तो विद्यार्थियों की यह सफलता एवं अभिभावकों का गुरुकुल के प्रति विश्वास ही हमारी असली पूँजी है। मन में परिणाम को लेकर जो घबराहट थी; वह राज्य शिक्षा केंद्र एवं माध्यमिक शिक्षा मंडल के परीक्षा परिणामों ने उत्साह में परिवर्तित कर दी। कक्षा आठवीं में शत-प्रतिशत परिणाम एवं 9 विद्यार्थियों का A+ में आना रोमांचित करने वाला पल था तो कक्षा दसवीं में मध्यप्रदेश की प्रावीण्य सूची में कु. हिमांशी यादव का नवम स्थान, कु. कुमकुम लोधी का दशम स्थान, 27 विद्यार्थियों को 90% से अधिक अंक, 174 में से 158 विद्यार्थियों का प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होना, कुल 96.55% परिणाम वहीं दूसरी ओर कक्षा 12वीं में कु. बबली अहिरवार का जिले में प्रथम स्थान, 83 विद्यार्थियों को 75% से अधिक अंक, 153 में से 127 विद्यार्थियों का प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होना, 12वीं का 96.05% परिणाम गौरवान्वित करने वाला है। **वास्तविकता में देखा जाए तो विद्यार्थियों का यह परिणाम किसी सम्मान से कम नहीं है।**

इस माह में ही गुरुकुल विद्यालय ने अपनी 82 वर्षों की यात्रा पूर्ण करते हुए 83वें वर्ष में प्रवेश किया। निरंतर प्रगति पथ पर वृद्धिंगत गुरुकुल स्थानीय समाज के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त सहयोग का उत्कृष्ट उदाहरण है। 82 वर्ष पूर्व खुरई की पवित्र वसुंधरा पर श्रेष्ठियों एवं मनीषियों के द्वारा अंकुरित गुरुकुल रूपी शैक्षणिक संस्थान का बीज आज वटवृक्ष के रूप में है, किसी भी शैक्षणिक संस्थान की प्रतिष्ठा, विश्वसनीयता ईंट-रेत-सीमेंट से बने हुए भवन से नहीं अपितु उसके द्वारा किए जा रहे कार्यों से होती है; जिसका जीवंत उदाहरण यह शैक्षणिक संस्थान है।

गुरुकुल परिवार के लिए अप्रैल उत्साह, उल्लास, उमंग एवं रोमांच से भरा हुआ माह है। निरंतर प्रबंधन का मार्गदर्शन, शिक्षक-शिक्षिकाओं का समर्पण, अभिभावकों का सहयोग एवं विद्यार्थियों का विश्वास ही हमारी सबसे बड़ी जीत है। आज जो भी करना संभव हो पाता है वह इच्छाशक्ति एवं दृढ़ संकल्पता का ही परिणाम है। आगे भी आप सभी का इसी प्रकार स्नेह प्राप्त होता रहेगा और गुरुकुल निरंतर विकास यात्रा पर अग्रसर रहेगाय ऐसी मंगल कामना के साथ..... अस्तु !

अभिभावक: निस्वार्थ प्रेम की मूरत

कच्ची मिट्टी को जो एक आकार देते हैं
अपनी खुशियों को जो बच्चों पर वार देते हैं
थक कर भी जो चेहरे पर शिकन नहीं लाते
वो अभिभावक ही हैं जो गिरते को संभाल लेते हैं

पिता की वह डांट में छुपा गहरा दुलार
सपनों को सच करने का वो अटूट आधार
धूप में खुद जलकर जो हमें छांव देते हैं
संघर्षों की लहरों में वह पतवार देते हैं

मां की ममता का तो कोई मोल नहीं होता
उसके आंचल जैसा दुनिया में कोई और नहीं होता
पहली गुरु, पहली दोस्त, वही जन्नत का द्वार है
उसकी एक दुआ में बसता सारा संसार है

उंगली पड़कर जिन्होंने चलना सिखाया
सही और गलत का हमें भेद बताया
ईश्वर का रूप है धरती पर ये माता-पिता
जिन्होंने हमें सुंदर जीवन से मिलाया।

श्री इंद्राजसिंह दांगी
(शिक्षक)

सुविचार

-श्री प्रवीण श्रीवास्तव

1. हम जैसा भी सोचते हैं, वैसा ही करने लगते हैं इसलिए अध्ययन में नई जानकारी प्राप्त हो, इस हेतु कोशिश करते रहना चाहिए।
2. जो हो रहा है वह निरंतर चल रहा है और चलता रहेगा हम भी चिंतन मनन के साथ आगे बढ़ते रहे और अपने लक्ष्य को प्राप्त करें।

क्या आप जानते हैं ? ऐसा क्यों होता है ?

-श्री देवीसिंह लोधी (व्याख्याता)

प्रश्न-स्कूल बसों का रंग पीला क्यों होता है ?

उत्तर- स्कूल बसों के पीले होने का मुख्य कारण स्कैटरिंग (Scattering) और विजिबिलिटी का संतुलन है, लाल रंग की वेवलेंथ सबसे ज्यादा होती है, इसलिए लाल रंग दूर से दिखता है, लेकिन यह केवल सीधे देखने पर ही प्रभावी है।

पीला रंग और श्लेटरल विजन पीले रंग की तरंगदैर्ध्य ऐसी होती है जिसे हमारी आँखें भीड़-भाड़ में सबसे जल्दी पहचानती हैं। वैज्ञानिक रूप से, पीले रंग की वेवलेंथ लाल से कम और नीले से ज्यादा होती है, जो इसे कोहरे और बारिश में बिना ज्यादा फैले (Scatter हुए) स्पष्ट दिखने में मदद करती है।

आंखों की संवेदनशीलता इंसानी आँखें 555 नैनोमीटर (NM) के आसपास की वेवलेंथ के लिए सबसे ज्यादा संवेदनशील होती हैं और पीला रंग इसी रेंज के बहुत करीब आता है।

निष्कर्ष-लाल रंग 'खतरे' को दूर से दिखाता है, लेकिन पीला रंग 'सावधानी' और 'त्वरित पहचान' (Quick Identification) के लिए सबसे बेहतर वेवलेंथ प्रदान करता है।

ज्ञानवर्द्धक बातें....

1. केंद्र सरकार ने BHAVYA योजना (भारत औद्योगिक विकास योजना) को मंजूरी दी।
2. सुप्रीम कोर्ट ने गोद लेने वाली माताओं को मातृत्व अवकाश देने का निर्णय दिया।
3. अप्रैल-2026 में हीटवेव और Urban Heat Island प्रभाव प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दे रहे।
4. भारत और उज्बेकिस्तान के बीच 'DUSTLICK' संयुक्त सैन्य अभ्यास आयोजित हुआ।
5. भारत में ICC T-20 विश्व कप-2026 का खिताब जीता।
6. भारतीय पैरा तीरंदाज शीतला देवी को Para Archer of the Year सम्मान मिला।
7. मुंबई में भारत टैक्सी एप लांच हुआ; जो ड्राइवरों के लिए सहकारी मॉडल पर आधारित है।
8. धार जिले में मध्यप्रदेश का पहला पीएम मित्र मेगा टेक्सटाइल पार्क होगा।
9. रायसेन में 11-13 अप्रैल 2026 तक तीन दिवसीय कृषि महाकुंभ आयोजित किया गया।

''महत्वपूर्ण दिवस''

8 मार्च-अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस
7 अप्रैल-विश्व स्वास्थ्य दिवस
14 अप्रैल- डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती
13 अप्रैल-जलियांवाला बाग स्मृति दिवस
22 अप्रैल-विश्व पृथ्वी दिवस

संकलन-कु. आस्था जैन (शिक्षिका)

पटल सज्जा प्रतियोगिता

नवीन सत्र में दलवार प्रथम प्रतियोगिता पटल सज्जा का आयोजन किया गया, जिसमें चारों दलों ने ''जीवन में शिक्षा का महत्व एवं स्कूल चलें हम'' विषय को मुख्य रखते हुए अपने पटल को सजाया। जिसमें क्रमशः प्रथम विवेकानन्द दल, द्वितीय अरविन्दो दल, तृतीय शिवाजी दल एवं चतुर्थ निवेदिता दल ने स्थान प्राप्त किया। इन सभी बोर्ड को सजाने में एवं विषय वस्तु तैयार करने में दल के सभी विद्यार्थियों का सहयोग प्रशंसनीय रहा। ध्यातव्य हो कि प्रतिमाह इस प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में कौशल विकास किया जाता है।

आचरण: जीवन का दर्पण

-देवेन्द्र जैन (संस्कृत शिक्षक)

आचरण का अर्थ है हमारा व्यवहार, चरित्र और काम करने का तरीका। मनुष्य अपनी वेशभूषा या धन से उतना महान नहीं बनता, जितना अपने अच्छे आचरण से बनता है। कहा भी गया है-''यदि धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, लेकिन यदि चरित्र (आचरण) चला गया, तो सब कुछ चला गया।''

अच्छे आचरण के गुण-

एक श्रेष्ठ आचरण वाले व्यक्ति में निम्नलिखित गुण होते हैं-

सत्यनिष्ठा- हमेशा सच बोलना और ईमानदारी का मार्ग अपनाना।

विनम्रता- बड़ों का सम्मान करना और छोटों से प्रेमपूर्वक बात करना।

अनुशासन- समय का पालन करना और अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहना।

सहनशीलता- कठिन परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखना।

आचरण का महत्व-

समाज में सम्मान- अच्छा आचरण रखने वाले व्यक्ति को हर जगह सम्मान मिलता है और वह दूसरों के लिए प्रेरणा बनता है।

आत्मसंतोष- जब हम सही काम करते हैं, तो हमें आंतरिक शांति और खुशी मिलती है।

सफलता का आधार- अनुशासित और सद्व्यवहार करने वाले व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में सफल होते हैं।

निष्कर्ष-

हमारा आचरण ही समाज में हमारी पहचान बनाता है। शिक्षा का असली उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि एक चरित्रवान इंसान बनना है। यदि हमारा आचरण शुद्ध है, तो हम न केवल अपना बल्कि पूरे समाज और देश का कल्याण कर सकते हैं।

Ego and Human Thinking

Mrs. Manisha Kukrele(English Teacher)

It is often seen that people start considering themselves superior and others inferior. This thinking usually arises from ego, ignorance, or the habit of comparison. When a person begins to consider their achievements, knowledge, or status as very great, they unknowingly start underestimating others.

But the truth is that every person has some unique quality. Someone may have more knowledge, someone more experience; someone may be skilled in art, while another may be rich in service and compassion. Therefore, judging someone as superior or inferior on the basis of only one aspect is not right.

When we learn to respect others, harmony and cooperation increase in society. Humility teaches us that we are all human beings and everyone has their own importance.

Therefore, the true sign of greatness is not to make others feel small, but to respect everyone and try to learn something from them.

आखिर क्यों.... ?

-श्रीमती भारती राठौर (हिन्दी शिक्षिका)

एक इंसान के दो चेहरे क्यों,
दो कान फिर भी बहरे क्यों,
आँख मिली देखने के लिए,
कान मिले सुनने के लिए
मुँह मिला कुछ कहने के लिए
फिर भी गलत को सुनकर, क्यों अनसुना करते हैं ?
अपराध को देखकर क्यों मौन रहते हैं ?
झूठ बोलने से नही परहेज, क्यों सच बोलने से डरते ?
बुरे हैं, अंदर बुराई भी, फिर भी अच्छाई का नाटक करते क्यों ?
क्यों राम के राज्य में
क्यों कृष्ण के साम्राज्य में
प्रीत की विरहा, क्यों सीता सी अग्निपरीक्षा
कहाँ गया अर्थ कबीर के दोहों का
क्यों नहीं समझा मीरा की भक्ति को
संसार इतना वीभत्स क्यों ? चहुँ ओर बस हाहाकार क्यों ?
बंद करो बुरा-भला कहना, अंत में तो सबको ही है जलना
चलो बढ़ें आगे, करें फिर पुनर्निर्माण
चलो बोते है बीज खुशियों का
महकते सुख के फूलों की खुशबू फैलाए
ना रहे कोई चेहरा ज़ार-ज़ार, और फैलाएं बस प्यार ही प्यार...

व्यंग्य-

मानव समझदार हो रहा है....

-कपिल जैन (संस्कृत शिक्षक)

आधुनिकता की आड़ में , मतलबी भेड़ चाल में
चंद खुशी की बहार हो रहा है।
मानव समझदार हो रहा है.....
कल जो गुप्त था, आज सरेआम हो गया है
सोचना भी अब मशीनों का काम हो गया है
जाने क्यों ? मानवीय शक्ति कमजोर होती जा रही है।
महत्वता इंसान से अधिक उपकरणों को दी जा रही है।
मानो अपने ही हाथों बेअसर सरदार हो रहा है।
मानव समझदार हो रहा है.....
फोटो सांझा की बेटी ने , मशहूर होना चाहती थी।
एक मशीन के माध्यम से, लोगों से जुड़ना चाहती थी।
कमाल उस एक यंत्र का देखो, दुनिया बदल रही है।
कल सांझा की फोटो आज देखने से बेटी डर रही है।
दुनिया के सामने बाप की इज्जत उछल रही है।
भयभीत होकर बेटियां खुद को खत्म कर रही है।
अब घर-घर में बाप लाचार हो रहा है।।
मानव समझदार हो रहा है.....
अच्छा है ! किसी को बुद्धि बनाने का अधिकार दे चुके है।
एक मशीन के भरोसे मानव के सारे कौशल सो चुके है।
संस्कृति नवीनता से अपने अस्तित्व की भीख मांग रही है।
त्रिमता कुदरत के तरीकों की दहलीज लांघ रही है।
उपकरणों के दौर में सारा संसार सुस्त पड़ रहा है।
निर्मित के आगे निर्माता फीका पड़ रहा है ।
जिसको मानव ने बनाया अब खुद उसी का शिकार हो रहा है।
मानव समझदार हो रहा है.....

संगति

-देवेन्द्र जैन (संस्कृत शिक्षक)

व्यक्ति की पहचान उसकी संगति से होती है, संगति वह पारस पत्थर है जो मनुष्य को या तो 'कीमती रत्न' बना सकती है या 'मिट्टी'। जैसे पानी की एक बूँद अगर कीचड़ में गिरे तो वह गंदगी बन जाती है, लेकिन वही बूँद सीप में गिरकर मोती बन जाती है। बूँद वही है, बस संगति का फर्क है।

व्यक्तित्व का निर्माण– जैसा संग, वैसा रंग। हम जिन लोगों के साथ रहते हैं, उनकी ऊर्जा, सोच और आदतें अनजाने में ही हमारी पहचान बन जाती हैं।

प्रभाव– अच्छे लोग हमें संस्कार और समाधान देते हैं, जबकि बुरे लोग केवल तनाव और पतन की ओर ले जाते हैं। सज्जन व्यक्ति अंधेरे में दीपक की तरह होते हैं जो रास्ता दिखाते हैं।

विचारों और डिजिटल संगति– संगति केवल व्यक्तियों की ही नहीं, बल्कि पुस्तकों, विचारों और उन सूचनाओं की भी होती है जिन्हें हम इंटरनेट पर ग्रहण करते हैं। श्रेष्ठ विचार ही श्रेष्ठ जीवन का आधार हैं।

निष्कर्ष– गलत के साथ में चलने से कहीं बेहतर है-अकेले चलना। हमेशा उन लोगों का साथ चुनें जो आपसे बेहतर हों और आपको ऊँचा उठाने की प्रेरणा दें। याद रखें, आप अपनी संगति चुन सकते हैं, लेकिन अपनी संगति के परिणामों को नहीं। आपकी संगति ही आपके आने वाले कल का आईना है।

''माँ''

-श्रीमती भारती राठौर (हिन्दी शिक्षिका)

दुनिया का सबसे सुन्दर शब्द... मां
नन्हें से बालक की पूरी दुनिया... मां
ना कोई बताता, ना कोई सिखाता
मुख पर अपने आप ही आता... मां
भूख लगे तो बस याद आती... मां
चोट लगे तो याद सताती... मां
कोई घर में आए, हम बाहर जाएं
कुछ चाहिए तो सबसे पहले याद आती... मां
इस दुनिया में लाने वाली.... मां
दुनिया से पहचान कराने वाली... मां
दुनिया में पहचान बनाने के लिए
सक्षम बनाने वाली सिर्फ.... मां
अपने अस्तित्व में बस तुझको ही पाऊँ... मां
ऐसी ईश्वर से.... मनोकामना

ओ राही....

कु. अमिता जैन (शिक्षिका)

ओ राही तू चलता चल
मंजिल की आस में
मिले इस विश्वास में
हर ठोकर के प्रयास में
बस रख हौसला साथ में
तू यूं ही बढ़ता चल
ओ राही !तू चलता चल...

मिले जो रास्ते में कोई
उन्हें भी मुसाफिर समझ
ना होगा कल वो साथ
ना कोई आजमाइश रख
मौसम को बना साथी
झोकों सा उड़ता चल
ओ राही !तू चलता चल

मुश्किल हो जो अगर सफर
पर रुकने ना दे अपने कदम
गुनगुनाते चल गीत कोई
खुद को ही समझ हमसफर
गम के चुभे कांटे तो भी
मुस्कुराहट के फूल बिखेरता चल
ओ राही !तू चलता चल

आएंगी जब मंजिल नजर
भर खुद में फिर और दम
सफर नहीं हुआ है अभी खत्म
ये सोच बढ़ाते चल अपने कदम
जो मिलेगा लाजवाब होगा
मस्ती के रंग खुद से भरता चल
ओ राही !तू चलता चल....।

कहो, तो कह दूँ...

अकथ, हतप्रभ, अभेद, पहेली, गुत्थी
अतिसूक्ष्म किंतु स्थूल मनुज मन,
संजोए क्या-क्या रहता...
कहो तो कह दूँ...

काया स्थिर ही रह जाती
नील गगन से शांत हृदय में,
जब चिन्ताओं के आघातों का भूचाल है उठता,
बाधाएँ फिर क्या-क्या डसतीं...
कहो तो कह दूँ...

भिज्ञ हो सब भानु सम
नलिनी भी हिम पात से,
कुम्हला जाती है कभी।
कभी स्वयं कलानिधि,
जो महाकाल शेखर राजते...
ऐसे शुभ्र मयंक को खल राहु ग्रसता है कभी।
पर क्षणिक तम प्रभाव से,
इंदु, कलंक कहाव से, न मलीनता कभी।

तेज सीमाओं में न बँधता,
अंधकाल के अंधकार में,
अंशुमाली सम चमकता।
उत्तरार्ध फैले तेज की,
आभाएँ कैसे किलकतीं।
कहो तो कह दूँ...

-श्रीमती प्रियंका पांडे (शिक्षिका)

अनेकांतवाद

सत्य की सापेक्षता का सिद्धांत

परिभाषा- किसी भी सत्य को बहुआयामी दृष्टिकोण से ही समझा जा सकता है अर्थात् किसी भी सत्य को संपूर्ण रूप से केवल एक ही दृष्टिकोण से ना समझा जाए।

तर्क- सत्य को एक ही दृष्टिकोण से ना समझ पाने के पीछे सबसे बड़ा तर्क यह है कि किसी भी वस्तु में अनंत गुण विद्यमान होते हैं। परंतु मानवीय मस्तिष्क की सीमित क्षमता के कारण हम एक बार में वस्तु के एक ही पहलू का अवलोकन कर पाते हैं अर्थात सत्य के संपूर्ण स्वरूप को ना समझकर उसका केवल एक ही पक्ष समझ पाते हैं।

उदाहरण-यदि एक गिलास में पानी भरा है तो इसे निम्न दृष्टिकोण से देखा जा सकता है।

सामान्य दृष्टिकोण- गिलास पानी से आधा भरा है।

आलोचनात्मक दृष्टिकोण- गिलास पानी से आधा खाली है।

सकारात्मक दृष्टिकोण-गिलास पूरा भरा है, आधा पानी से और आधा वायु से। अतः उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि सत्य सापेक्षित है। दृष्टिकोण परिवर्तन से सत्य भी परिवर्तित हो जाता है। इसलिए पूर्ण सत्य एक आदर्श अवधारणा है तथा मानव के समस्त विचार आंशिक सत्य पर आधारित होते हैं।

निष्कर्षतः मनुष्य को सदैव अपने विचारों में उदारता तथा सहिष्णुता रखनी चाहिए तथा दूसरों के विचारों को सदैव समझने और सम्मान देने का प्रयास करना चाहिए।

-श्री पीयूष जैन
(व्याख्याता, कला संकाय)

''मुस्कुराहट की माप''

-डॉ. अमित नेमा (कम्प्यूटर शिक्षक)

खुशी (Happiness) एक मानसिक अवस्था है जिसे हम अपने सकारात्मक दृष्टिकोण और आदतों से बेहतर बना सकते हैं। यह क्विज आपकी दैनिक आदतों और मानसिक स्वास्थ्य को समझने में मदद करेगा।

'हैप्पीनेस क्विज'

1. क्या आप दिन भर में कम से कम एक बार किसी ऐसी गतिविधि के लिए समय निकालते हैं जो आपको वास्तव में पसंद है (जैसे - पेंटिंग, खेलना, संगीत)?
2. जब आप सुबह उठते हैं, तो क्या आप आने वाले दिन के बारे में सकारात्मक महसूस करते हैं ?
3. क्या आप अपनी छोटी-छोटी सफलताओं या खुशियों का जश्न मनाते हैं ?
4. क्या आप दूसरों की मदद करने या उन्हें खुश देखने में खुशी महसूस करते हैं ?
5. क्या आप तनावपूर्ण स्थिति में भी शांत रहने और समाधान खोजने की कोशिश करते हैं ?
6. क्या आप हर दिन कम से कम 7-8 घंटे की अच्छी नींद लेते हैं और सुबह तरोताजा महसूस करते हैं ?
7. क्या आप अपने दोस्तों और परिवार के साथ खुलकर बातें साझा करते हैं ?
8. क्या आप सोशल मीडिया पर दूसरों से अपनी तुलना करने के बजाय खुद की प्रगति पर ध्यान देते हैं ?
9. क्या आप दिन के अंत में उन बातों के लिए आभार (Gratitude) व्यक्तकरते हैं जो आपके जीवन में अच्छी रहीं ?
10. क्या आप अपनी गलतियों पर दुखी होने के बजाय उनसे सीखकर आगे बढ़ने में विश्वास रखते हैं ?

अपना स्कोर कैसे बनाएं - मूल्यांकन पद्धति-

हाँ/अक्सर	:	2 अंक
क्भी-कभी	:	1 अंक
नहीं	:	0 अंक

15 - 20 अंक : आप बहुत खुशमिजाज व्यक्ति हैं। आपकी आदतें और सोच सकारात्मक हैं। इसे बनाए रखें।

8 - 14 अंक : आप सामान्य रूप से खुश हैं, लेकिन कुछ क्षेत्रों में सुधार की गुंजाइश है। अपनी पसंदीदा गतिविधियों को थोड़ा और समय दें।

0 - 7 अंक : आपको अपनी दिनचर्या और सोच पर ध्यान देने की जरूरत है। याद रखें, खुशी छोटे-छोटे बदलावों से आती है। अपने प्रियजनों से बात करें और खुद के लिए समय निकालें।

आशा है कि यह क्विज आपको अपनी खुशी को बेहतर ढंग से समझने में मदद करेगा। मुस्कुराते रहिए !

हम शिक्षक हैं

-श्रीमती प्रिया जैन (शिक्षिका)

हम शिक्षा की तस्वीर बदल देंगे।
भारत के नन्हें मुन्नों की तकदीर बदल देंगे।
हम ही विश्वामित्र बनें और
हम ही गुरु वशिष्ठ बनें
हम ही गुरु द्रोण बनें हम ही चाणक्य बनें
हम भी किसी से कम तो नहीं इतिहास बदल देंगे
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षा की तस्वीर बदल देंगे।
गुरु की महिमा सबसे ऊंची नर हो चाहे नारायण
यही सिखाते गुरुग्रंथ, बाइबिल, कुरान और रामायण
जला ज्ञान का दीपक, अंधेरी रात बदल देंगे
हमसे जीवित लोकतंत्र और हमसे जिंदा ज्ञान है
हमको ही रचना होगा अब शिक्षित हिंदुस्तान है
मीठा कर देंगे सागर को, हम नीर बदल देंगे
ताँक रही है भारतमाता, आशा भरी निगाहों से
भटक रहा क्यों भोला बचपन अंधकार की राहों में
प्रण लेते, हर हाथ की हम लकीर बदल देंगे
सौंप दिया है भाग्य वतन का सब ने अपने हाथों में
श्रद्धा और विश्वास दिया है सबने अपने हाथों में
इस विश्वास की लाज बचा संसार बदल देंगे
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षा की तस्वीर बदल देंगे ।

लक्ष्य की प्राप्ति कैसे करें ?

-श्रीमान अकील खान (शिक्षक)

अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि आप कल्पनाशील, साहसी जैसे गुणों को अपने में समाहित करें साथही श्रमशील, आशावादी, दृढ़ इच्छाशक्ति को अपनाएँ।

लक्ष्य प्राप्ति के कुछ सुझाव-

1. अपने लक्ष्य की कल्पना करें- कल्पना करना हर व्यक्ति को पसंद होता है इसलिए आप लक्ष्य की कल्पना करें और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करें आप अपनी कल्पनाओं से सफल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

2. चुनौती का सामना करें- आपको अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है आप उन चुनौतियों को स्वीकार करें एवं अपने लक्ष्य को प्राप्तकर एक कुशल एवं सफल व्यक्तित्व का निर्माण करें।

3. आशावादी बनें- आपअपने व्यक्तित्व को आशावादी बनाऐं। यदि आपको किसी लक्ष्य को पाने की दृढ़ इच्छाशक्ति होगी तो ही उसे प्राप्त करने के लिए आप अधिक मेहनत करेंगे। अंत में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे।

4. अपना आदर्श बनाऐं- हर व्यक्ति की सफलता के पीछे एक ऐसा व्यक्ति अवश्य होता है जिससे वह प्रेरित होता है। अत: आपको भी किसी को अपना आदर्श बनाना चाहिए जो आपको सीखने व सफल होने के लिए हमेशा प्रेरित करे।

इन आदर्शों को अपनाकर आप जीवन में सफल व्यक्ति बन सकते है। स्वयं सफल होकर अपने परिवार, समाज, राज्य व राष्ट्र के विकास व उत्थान में सहयोग कर सकते हैं।

गुरुकुलस्य महिमाः

(शार्दूलविक्रीड़ितम् छंद)
प्रयंकोऽत्र विराजते प्रशमवान् धर्मज्च नः शिक्षति ।
प्रीतिं वर्षति धनतः प्रियवरः धर्मेन्द्र-ज्ञानी तथा।।
ज्ञानस्यैव भवेच्च अत्र कथनं मध्येऽपि विद्यार्थिनाम् ।
छात्रोऽहं सुयोग्योऽस्मि मेऽस्ति कथनं विद्यालयादागतः।।

भावार्थ- यहाँ अत्यंत शांत स्वभाव वाले प्रयंक विराजमान हैं, जो हमें धर्म (नैतिकता और कर्तव्य) की शिक्षा देते हैं। साथ ही, प्रियवर धर्मेन्द्र ज्ञानी जी अपनी उदारता और ज्ञान से हम पर स्नेह की वर्षा करते हैं। यहाँ विद्यार्थियों के बीच में भी केवल ज्ञान की ही चर्चा होनी चाहिए। मैं एक सुयोग्य छात्र हूँ और विद्यालय से लौटकर यही कह रहा हूँ (या यह मेरा अनुभव है)।

(अनुष्टुप छंद)
ग्रहवत् धर्मतीर्थेऽय मे मनसि विराजते ।
धर्मध्यानमहं त्वा ऋणमस्य प्रपूरयेम् ।।

भावार्थ- यह धर्मरूपी तीर्थ (विद्यालय या गुरु का सानिध्य) मेरे मन में किसी ग्रह (जैसे सूर्य या चंद्रमा) की भाँति तेजस्वी होकर विराजमान है। मैं अपने धर्म और कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करके इसके प्रति अपने ऋण को पूर्ण रूप से चुकाने का प्रयास करूँगा।

-श्री सिद्धांत जैन
(संस्कृत शिक्षक)

भागती जिंदगी थकता जीवन

-श्रीमति ज्योति तिवारी (शिक्षिका)

दौड़ा-दौड़ा, भागा-भागा सा... दौड़ा-दौड़ा, भागा-भागा सा... हास्य रूप में प्रदर्शित यह गीत शाश्वत-सत्य प्रतीत होता नजर आ रहा है। एक समय था जब मोहल्ले-कॉलोनी के आसपास आते ही शरीर आराम महसूस करने लगता था। चाल मध्यम और शरीर मस्त हो जाता था। आज वह चैन, घर तो छोड़िए.. .. 2X2 की उस छोटी-सी जगह में भी मोबाइल की घंटी ने गायब कर दिया है। अभी कुछ ही सालों में समय की गति दस गुना बढ़ी नजर आती है। बच्चे को माता-पिता की बात का रूककर उत्तर देने का समय, माता-पिता को बच्चे की परेशानी पूछने का समय, राहगीर को रास्ता बताने का समय, बिना मोबाइल चाय पीने का समय, सफर करने का समय, प्रार्थनासन का समय, खाने का भी समय नहीं ।
कितना कमाना है ?..... कि जितने में जीवन सुखी रहे।
क्यों कमाना है ?..... कि आराम की जिंदगी के लिए।
इन उद्देश्यों की पूर्ति हो पा रही है ? या केवल भूख और दौड़ ही हिस्से में आ रही है ?
अचानक होते हार्ट स्ट्रोक हमें क्या चेतावनी दे रहे हैं ?
रंगे बाल किसको भुलावा दे रहे हैं ?
अपने स्वास्थ्य और खाने को तो भागम-भाग से दूर रखें ताकि लम्बी रेस का घोड़ा बन सकें। कम से कम दशक भर तो पेंशन का आस्वादन लें।

कर्तव्य

कर्तव्य मार्ग पर डटे रहे।
कर्तव्य को ही सदा लहे ।
कर्तव्य हमारा प्यारा हो।
कर्तव्य हमारा न्यारा हो।
कर्तव्य दिखाई दे।
कर्तव्य की ही गूँज सुनाई दे।
कर्तव्य में ही तन्मय हों,
कर्तव्य में ही लय-मय हों।
कर्तव्य सिवा न कुछ और हो,
कर्तव्य ही जीवन का भोर हो।
कर्तव्य बिना न जिया जाए,
कर्तव्य बिना न मरा जाए।
कर्तव्य हमारा लक्ष्य हो,
कर्तव्य ही हमारा साक्ष्य हो।
मानव का जो काम है,
कर्तव्य उसका नाम है।
प्राणी का सब कर्तव्य यही,
दूजा इसके और कोई नहीं।
दुविधा में जब फँस जाएँ,
कर्तव्य हमें तब याद आए।
लक्ष्य ही इसका सिद्धांत है,
कर्तव्य ही पूर्ण विधान है।

-श्री सिद्धांत जैन (शिक्षक)

जीवन की दौड़

दौड़ स्वयं से स्वयं तक...
तू दौड़ में अव्वल आए,
ये जरूरी नहीं...
तू सबको पीछे छोड़ दे,
यह भी जरूरी नहीं...
जरूरी है
तेरा दौड़ में शामिल होना,
जरूरी है
तेरा गिरकर फिर खड़े होना।
जिंदगी में इम्तिहान बहुत होंगे,
आज जो आगे हैं,
कल तेरे पीछे होंगे।
बस तू चलना मत छोड़ना,
बस तू लड़ना मत छोड़ना।

-श्रीमती संगीता दुबे
(शिक्षिका)

मन की तूलिका

मन की तूलिका से
भर डाले रंग सारे....
भर डाले रंग सारे,
हल्के गहरी प्रीत सुनहरे,
रंग सारे के सारे.....
रंग सारे के सारे,
जीवन की पाती लिख डाली
रंग हजारों भरकर....
रंग हजारों भरकर,
मन की तूलिका से.... !

कब सोचा था इस कैनवास पर
रंग भरूंगी सारे.....
मैं रंग भरूंगी सारे,
पर करती क्या जब सौंपा है
ये सब रब ने प्यारे....
ये सब रब ने प्यारे ,
मन की तूलिका से ... !

मटमैले धूमिल रंगों को
खूब सजाया ऐसे....
मैंने खूब सजाया ऐसे,
पास खड़े शोख रंग भी
लालायित हो जैसे...
लालायित हो जैसे,
मन की तूलिका से..... !

जब कैनवास से पूर्ण हुआ तो
रंग सजे थे सारे...
रंग सजे थे सारे,
स्वर्णिम से भी चटक दिखे थे
धूमिल और मटमैले....
धूमिल और मटमैले,
मन की तूलिका से.... ! ! !

श्रीमति वनिता श्रीवास्तव
(खेल प्रशिक्षिका)

सुविचार

1. हम कोशिश कर सकते हैं, 'हम सफल होंगे' ऐसा ही सोचना चाहिए।
2. हम जो भी अध्ययन करें उसे पर चिंतन करते रहना चाहिए।

-श्री प्रवीण श्रीवास्तव

वार्षिक परीक्षा परिणाम (सत्र 2025–26) – कक्षा एवं वर्गवार

कक्षा	प्रथम स्थान	द्वितीय स्थान	तृतीय स्थान
VI-A	कृतिका ठाकुर (93.67%)	रीतेश पटैल (91.50%)	मोनिका राजगौंड़ (89.83%)
VI-B	ललित साहू एवं सिद्धी केशरवानी (96.83%)	लेखपाल प्रजापति (95.17%)	देवांश जैन (90.50%)
VI-C	विधि साहू (92%)	हर्षिता घोषी (90%)	सूर्यांशसिंह दांगी (88.17%)
VII-A	भाविनी श्रीवास्तव (94.83%)	पूर्वी जैन (90.67%)	समृद्धि दांगी (89.67%)
VII-B	प्रभातसिंह लोधी (83.67%)	अंशिका साहू (82%)	आस्था राजपूत (77.17%)
VII-C	यशवंत यादव (86%)	अंकित कलावत (85.17%)	ज्ञानेन्द्र पटैल (83.33%)
IX-A	भव्या श्रीवास्तव (90.17%)	प्रियंका लोधी (89.83%)	हेमलता अहिरवार (89.33%)
IX-B	रोशनी रजक (96.50%)	राज राजपूत (86.67%)	कार्तिक दांगी (86.50%)
IX-C	अभिनय घोषी (92.67%)	भूमि दांगी (89.67%)	रामलखन यादव (88.33%)
IX-D	मुस्कान कुर्मी (92.17%)	नितिन सेन (82.83%)	रिमशा राय (81.33%)
IX-E	विभा कुर्मी (92.33%)	सुहाना कुर्मी एवं चांदनी अहिरवार (89%)	वेदांत यादव (88%)
XI-M	भूपेन्द्र लोधी (90.8%)	सम्यक् जैन (83.4%)	रोशन कुर्मी (75.6%)
XI-BIO.	खुशबू कुशवाहा (86%)	मानसी केशरवानी (80.2%)	नीलम प्रजापति (76.6%)
XI-COM.	दीपाली दांगी (86.8%)	वैशाली लोधी (83.6%)	समीक्षा लोधी (82.2%)
XI-AG.	सावेन्द्रप्रताप सिंह (89.4%)	महेन्द्र काछी (84.8%)	अर्चना राय (82.6%)
XI-ART	क्रिश राजा (93.8%)	महक अहिरवार (91.6%)	सोहम आठिया (90.6%)

सत्र 2025–26 का अंतिम पायदान वार्षिक परिणाम उद्घोषणा

सत्रांत और सत्रारंभ के मध्य की कड़ी वार्षिक परिणाम उद्घोषणा का दिन। कहते हैं पुराना जाएगा तभी तो नया आएगा। नया तभी आता है जब पुराने को अलग कर दिया जाए। अध्यनरत विद्यार्थियों के जीवन में यह बात बहुत महत्वपूर्ण है; एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण पड़ाव है परिणाम। जो हमें अनुभव कराता है कि हमने कितना सीखा और इस विचार योग्य भी बनाता है कि अभी हमें कितना सीखना है। विद्यालय में 31 मार्च 2026 दिन मंगलवार को सुबह 11:00 बजे से वार्षिक परीक्षा परिणाम के उद्घोषणा हेतु कार्यक्रम आयोजित किया गया। छात्रों की उत्सुकता इतनी कि समय से पूर्व ही विद्यालय में अपने-अपने अभिभावकों के साथ आने शुरू हुए। दीप-प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती पूजन के साथ ही संस्था प्राचार्य श्री प्रयंक जैन ने अध्यक्षता एवं श्री अशोक कुमार जैन ने विशिष्ट आतिथ्य स्वीकार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सर्वप्रथम प्राथमिक विभाग के शिक्षक श्री सत्यप्रकाश सोनी ने प्राथमिक विद्यालय की वार्षिक परीक्षा एवं परिणाम का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात प्राथमिक कक्षाओं में क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। गुरुकुल विद्यालय के परीक्षा प्रमुख श्री प्रवीण जैन ने स्थानीय कक्षाओं (6वीं, 7वीं, 9वीं और 11वीं) के साथ ही कक्षा आठवीं के बोर्ड परीक्षा परिणाम का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात अध्यक्ष महोदय एवं विशिष्ट अतिथि महोदय ने संपूर्ण सत्र में शत-प्रतिशत उपस्थिति वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया; साथ ही कक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर और श्रेष्ठतम विद्यार्थियों का स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम के अंत में अध्यक्ष महोदय ने विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को संबोधित करते हुए आगामी सत्र 2026-27 के क्रियान्वयन की मुख्य जानकारी प्रदान की। छात्र हित में विद्यालय के सहयोग के साथ ही अभिभावकों के सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका एवं अपेक्षाओं पर जोर दिया और अभिभावकों से विद्यालय एवं छात्र हित में सुझाव, प्रेरणा एवं शिकायत हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षिका कु. आस्था जैन ने किया।

प्रवेशोत्सव के साथ नवीन सत्र 2026-27 का आगाज

1 अप्रैल 2026, दिन बुधवार को विद्यालय में प्रवेशोत्सव मनाया गया। नवीन सत्र के प्रथम दिन छात्र-छात्राओं का शिक्षकों के द्वारा चंदन तिलक के माध्यम से स्वागत किया गया।

इस अवसर पर संस्था के वरिष्ठ शिक्षक श्रीमान एच. के. अग्निहोत्री ने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य एवं सुयोग्य नागरिक बनने हेतु सारगर्भित उद्बोधन दिया। तुलसीदास कृत लोकप्रिय महाकाव्य के नायक मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के आदर्श चरित्र के माध्यम से आपने छात्रों को इस हेतु प्रेरित किया कि अपने व्यवहारिक जीवन में इन आदर्शों को उतारकर श्रेष्ठ चरित्र निर्माण और संस्कारवान कैसे बन सकते हैं। आपने अनेक उदाहरण के माध्यम से भगवान श्री राम के आदर्श चरित्र का प्रतिपादन किया। आज के परिवेश में जहां समाज का चारित्रिक पतन भयावह स्थिति में गिरता जा रहा है; बहुमंजिला इमारतों का निर्माण तो हो रहा है; हमारे संस्कार और संस्कृति तीव्रता के साथ तिरोहित होती जा रही है; जो चिंतनीय विषय है। आपने शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को बताया कि धन का संग्रह किया जा सकता है; जिसे हम स्वर्ण में परिवर्तित कर सकते हैं परंतु कालांतर में यह धन अथवा स्वर्ण का कोई विशेष मूल्य नहीं रह गया तो वहीं दूसरी ओर उसे चुराया भी जा सकता है किंतु शिक्षा ऐसी पूंजी है जो दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है और उसे कोई चुरा भी नहीं सकता। छात्र-जीवन का प्रमुख उद्देश्य अधिक अंकों की प्राप्ति ना होकर परिपक्व ज्ञान प्राप्ति से अध्ययन होना चाहिए। अंत में छात्रों को एक अनुशासित, दृढ़निश्चयी और अदम्य साहसी बनकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की प्रतिस्पर्धा में श्रेष्ठ सफलता अर्जित करने की मंगलकामनायें प्रदान की और संस्था प्राचार्य के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए आभार व्यक्त किया।

सेवा और परमार्थ की विशेषता को लिए स्वर्णिम इतिहास का एक और अध्याय-गुरुकुल स्थापना दिवस

खुरई नगर की विशेषता के रूप में पहचाने जाने वाला गुरुकुल विद्यालय आज अपने जिस स्वरुप में विद्यमान है उसमें 82 वर्षों का इतिहास दृष्टव्य होता है।

आज गुरुकुल विद्यालय अपने 82 वर्ष पूर्णकर 83वां स्थापना दिवस मना रहा है। आज से 82 वर्ष पूर्व सन 1944 में वैशाख माह, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि (अक्षय तृतीया) के दिन इस विद्यालय की आधारशिला रखी गई। इस गौरवशाली दिवस को विद्यालय में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

नगर के गणमान्य विशिष्टजन श्री सुधीर जी गुरहा (अध्यक्ष, जैन युवा स्वास्थ्य सेवा परमार्थ अस्पताल, खुरई) एवं श्री संजय जी समैया (अध्यक्ष, श्री तारण-तरण चैत्यालय, खुरई) ने आतिथ्य स्वीकार कर कार्यक्रम में क्रमशः मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि पद को सुशोभित किया। कार्यक्रम का आरंभ अध्यक्ष श्री प्रयंक जैन के साथ अतिथियों ने मां भगवती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। संगीत विभाग की छात्राओं ने मां सरस्वती का आह्वान किया। कार्यक्रम अध्यक्ष ने अतिथियों का चंदन तिलक के साथ स्वागत किया। विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने स्वतंत्र गायन के माध्यम से कार्यक्रम को ऊर्जान्वित किया। कु. अनुभूति जैन (शिक्षिका) ने गुरुकुल-गाथा गीत के माध्यम से गुरुकुल की अतुलनीय प्रतिष्ठा को प्रस्तुत किया। गुरुकुल के इतिहास को 12वीं कला की छात्रा कु. लक्ष्मी राजपूत ने अपने सुंदर वक्तव्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया तो वहीं श्री कपिल जैन (शिक्षक) के द्वारा गुरुकुल-उत्सव को एक भजन के रूप में प्रस्तुत किया गया और कु. आस्था जैन (शिक्षिका) ने प्रेरणादायी गीत के माध्यम से समा बांधा। मोबाइल की दुनिया में संकुचित होती बच्चों की दिनचर्या को पुनः पारंपरिक खेलों से जोड़ने के लिए एक जीवंत झांकी को छात्र-छात्राओं के समूह ने नृत्य के माध्यम से मंच पर प्रस्तुत किया, जिसका निर्देशन श्रीमती भारती राठौर ने किया।

विद्यालय सदैव ही उत्कृष्ट प्रतिभाओं को निखारने एवं उनको सम्मानित करने के लिए जाना जाता है; इसी क्रम में विद्यालय की तीन छात्राओं एवं उनके अभिभावकों को मंच से सम्मानित किया गया। यह उस गौरवशाली क्षण के प्रति सूक्ष्म-सा आभार था जो विद्यालय के इतिहास के पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों में इन तीन प्रतिभावान छात्राओं ने मध्यप्रदेश की प्रावीण्य सूची में अपना स्थान सुनिश्चित करके विद्यालय को प्रदान किया। अतिथि महोदय ने छात्राओं के उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु शुभाशीष प्रदान किया साथ ही दर्शक समूह में बैठे छात्रों, अभिभावकों और शिक्षक-शिक्षिकाओं हेतु महत्वपूर्ण बातें साझा कर मार्गदर्शित किया।

अंत मे प्राचार्य महोदय ने आगंतुक अतिथियों एवं अभिभावकों के साथ ही कार्यक्रम में उपस्थित सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए गुरुकुल विद्यालय के स्वर्ण-इतिहास को अपने शब्दों के माध्यम से एक बार पुनः सभी की आंखों के समक्ष जीवंत कर दिया। कार्यक्रम का निर्देशन संस्था प्राचार्य श्री प्रयंक जैन एवं सम्पूर्ण संचालन श्रीमान् श्रीराम चतुर्वेदी द्वारा किया गया।

हार्दिक शुभकामनायें

XII result

हमारे गौरव

माध्यमिक शिक्षा मण्डल की परीक्षाओं के मेधावी छात्र-छात्रायें

96.05%
कुल परिणाम प्रतिशत

कक्षा 12 वीं में 152 में से 127
विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण

कुल विद्यार्थी	सम्मिलित	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी
153	152	127	19

बबली अहिरवार
(कृषि संकाय)
475/500
जिले में प्रथम स्थान

शिवम लोधी (कृषि)
473/500

स्वाति लोधी (कृषि)
461/500

विशेष राजपूत (गणित)
461/500

आराध्य जैन (कृषि)
457/500

सुमित घोषी (गणित)
453/500

घनश्याम कुर्मी (कृषि)
450/500

प्रियंका पाराशर (कृषि)
450/500

हर्षप्रताप कुर्मी (गणित)
450/500

अनिकेत जैन (वाणिज्य)
449/500

अजय कुमार (कृषि)
445/500

सूर्यप्रताप सिंह (कृषि)
443/500

नीलेश कुशवाहा (कृषि)
443/500

नैतिक जैन (गणित)
443/500

शैली तिवारी (कला)
441/500

काजल ठाकुर (गणित)
441/500

निखिल लोधी (गणित)
441/500

गौरव मिश्रा (कृषि)
440/500

विवेक चतुर्वेदी (गणित)
440/500

नीलेश साहू (गणित)
439/500

ध्रुव जैन (गणित)
439/500

घनश्याम कुर्मी (कृषि)
438/500

हरिकांत साहू (कृषि)
437/500

खुशी विश्वकर्मा (गणित)
434/500

अभिनय सेन (कृषि)
432/500

माही जैन (गणित)
432/500

अनुजा जैन (बायो)
427/500

रौनक अहिरवार (बायो)
427/500

अनुजसिंह दांगी (गणित)
427/500

ध्रुवसिंह दांगी (कृषि)
426/500

चन्द्रेश राजपूत (कला)
426/500

अमन कुर्मी (कृषि)
425/500

रुद्रप्रताप सिंह (कृषि)
425/500

Xth result

हमारे गौरव

माध्यमिक शिक्षा मण्डल की परीक्षाओं के मेधावी छात्र-छात्रायें

हार्दिक शुभकामनायें

90% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी

96.55%
कुल परिणाम प्रतिशत

कक्षा 10 वीं में 174 में से 158 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण

कुल विद्यार्थी	सम्मिलित	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी
175	174	158	10

हिमांशी यादव
491/500 (98.2%)
मध्यप्रदेश की प्रावीण्य सूची में नवम् स्थान

कुमकुम लोधी
490/500 (98%)
मध्यप्रदेश की प्रावीण्य सूची में दशम स्थान

सत्यम शर्मा
482/500

विशाल कुर्मी
482/500

प्रेमचन्द जैन
481/500

आदीश जैन
479/500

आयुष जैन
476/500

परी अहिरवार
475/500

दिव्यांश साहू
474/500

राधिका दांगी
473/500

नीरज यादव
472/500

आर्यन विश्वकर्मा
471/500

अनुष्का कुर्मी
470/500

अनामिका विश्वकर्मा
468/500

अमित घोषी
467/500

मान्या साहू
467/500

अभि जैन
464/500

संस्कार ठाकुर
461/500

सत्येन्द्र
461/500

राजवीर यादव
461/500

हर्षित कुर्मी
460/500

कंचन प्रजापति
459/500

अंशिका यादव
458/500

रिषिका राजपूत
458/500

वंश ठाकुर
458/500

काजल साहू
457/500

नमन जैन
455/500

श्रेष्ठ शिक्षण+श्रेष्ठ परिणाम+नवाचार+सर्वांगीण विकास+अनुशासन+संस्कार = गुरुकुल

प्रवेश प्रारम्भ
2026-27

एस. पी. जैन गुरुकुल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

कक्षा छठवीं से नवमीं एवं ग्यारहवीं में
(अपेक्षित संकाय-गणित, जीवविज्ञान, कला, वाणिज्य एवं कृषि)
(हिन्दी माध्यम)

विद्यार्थियों हेतु सुविधायें

- विद्यालय का 80 वर्षों का गौरवशाली इतिहास
- प्रशिक्षित एवं अनुभवी शिक्षक-शिक्षिकायें
- एन.सी.सी. सुविधा युक्त एक मात्र संस्थान
- प्रत्येक खेल के लिये पृथक-पृथक मैदान
- सी.सी.टी.वी. सहित व्यवस्थित कक्षायें
- बौद्धिक विकास हेतु कार्यक्रमों का आयोजन
- शारीरिक विकास हेतु खेलों का आयोजन
- सॉफ्टवेयर द्वारा बच्चे की जानकारी पालक को
- विषय विशेषज्ञों द्वारा समयानुसार उद्बोधन
- पूर्णतः अध्ययन का माहौल
- स्मार्ट क्लास द्वारा अध्यापन
- संगीत कक्ष
- चलचित्र कक्ष
- चिकित्सा सुविधा
- पुस्तकालय सुविधा
- विशाल कम्प्यूटर लेब
- नैतिक एवं संस्कार कक्षायें
- आर.ओ. सहित शुद्ध पेयजल

आवश्यक दस्तावेज

(अंकसूची/स्थानान्तरण प्रमाणपत्र आदि सभी दस्तावेजों में छात्र/छात्रा एवं माता-पिता का हिन्दी एवं अंग्रेजी में नाम एक-सा होना अनिवार्य है।)

- जन्म प्रमाण-पत्र
- स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र
- अंकसूची (पूर्व कक्षा)
- जाति प्रमाण-पत्र
- प्रवासन प्रमाण-पत्र
- समग्र आईडी
- रक्तवर्ग
- अपार आईडी
- निवास प्रमाण-पत्र
- आय प्रमाण-पत्र
- आधार कार्ड (छात्र/छात्रा का)
- आधार कार्ड (पिता का)
- बैंक पासबुक (छात्र/छात्रा का)
- स्थाई शिक्षा क्रमांक (PEN)
- फोटो (माता-पिता-स्थानीय अभिभावक)
- दिव्यांगता प्रमाण-पत्र (यदि आवश्यक हो)

छात्रावास सुविधा उपलब्ध (केवल जैन विद्यार्थियों हेतु)

छात्रों के लिये (कक्षा छठवीं से नवमीं एवं ग्यारहवीं)
छात्राओं के लिये (केवल कक्षा छठवीं एवं सातवीं में)
आर्थिक रुप से कमजोर मेधावी छात्रों के लिये पात्रता परीक्षा के पश्चात् छात्रावास शुल्क में विशेष छूट उपलब्ध है।

अधिक जानकारी हेतु

कार्यालय, एस. पी. जैन गुरुकुल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बीना रोड, खुरई-470117, जि. सागर (म.प्र.)
फोन नं. 07581-292148, 7222991947, 6261169996
Email- spjaingurukul@gmail.com Website- www.gurukulkhurai.in